Quadrant II –Notes

Programme: Bachelor of Arts (Second Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC 104

Paper Title: DSC: आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य: परिचयात्मक अध्ययन (1850-1960)

Unit: I

Module Name: भारतेन्दु एवं द्विवेदी युगीन निबंध

Module No: 10

Name of the Presenter: Dr. Vibha Lad

Notes:

निबंध उस गद्य रचना को कहते है जिसमें किसी विषय का वर्णन किया गया हो। निबंध के माध्यम से लेखक अपने विचारों को बड़े प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने की कोशिश करता है। निबंध नि + बंध से बना है। जिसका अर्थ है अच्छी तरह से बंधा हुआ। इनकी भाषा विषय के अनुकूल होती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की। भारतेंदु युग हिंदी निंबंध साहित्य के विकास यात्रा का प्रारंभिक चरण माना जाता है। इससे पूर्व गद्य लेखकों की रचनाओं में निबंध के गुण दिखायी नहीं देते हैं। सही अर्थों में भारतेन्दु जी के निबंध ही हिंदी के प्राथमिक निबंध है। जिसमें निबंध कला की सभी विशेषताएं हम देख सकते हैं। भारतेंदु जी ने हिंदी गद्य की जिसप्रकार अनेक विधाओं का सूत्रपात किया उसी प्रकार उन्होंने निबंध विषय एवं उसकी शैली के अनेक प्रयोग किए। उन्होंने इतिहास, समाज, धर्म, राजनीति, यात्रा इत्यादि विषयों पर व्यंग्य तथा विनोद से भरे निबंध लिखे। उन्होंने अपने सामाजिक निबंध में सामाजिक कुरीति पर प्रहार किया। राजनीतिक निबंधों में अंग्रेजी राज पर प्रहार किया। उनके निबंधों में विषयानुकूल भाषा शैली को हम देख सकते हैं। भाषा प्रौढ होते हुए भी बोझील नहीं लगती। उनके कुछ निबंध इसप्रकार है- कालचक्र, कश्मीर कुसुम, हिंदी भाषा, स्वर्ग में विचार सभा, लेवी प्राण लेवी इत्यादि। भारतेंदु युगीन निबंधकारों में महत्वपूर्ण निबंधकार बालकृष्ण भट्ट है। उनके साथ हरीनारायण चौधरी प्रेमघन, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, राधाचरण गोस्वामी, अंबिकादत्त व्यास, आदि के नाम भी उल्लेखनीय है। बालकृष्ण भट्ट हिंदी प्रदिप पत्रिका के

संपादक थे उन्होंने वर्णनात्मक, भावात्मक, विचारोत्तेजक, निबंध लिखे। वे हास्य को बहुत महत्व देते थे। उन्होंने आत्मनिर्भरता तथा कल्पना जैसे गंभीर विषयों के अतिरिक्त आँख नाक तथा कान आदि सामान्य विषयों पर भी निबंध लिखे। बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन आनंदकादम्बिनि के संपादक थे तथा भारतेंदु जी के मित्र थे। इनके निबंधों की भाषा चमत्कार प्रिय है। उसमें अलंकारिकता है। भारतेंदु युग के लेखकों की एक विशेषता यह है कि वे निबंधकार होने के साथ साथ पत्रकार भी थे। अतः उनमें वैयक्तिकता के साथ सामाजिकता का भान भी दिखायी देता है। इनकी शैली में हास्य एवं मनोरंजन की प्रधानता है। इन निबंधों का प्रमुख उद्देश्य राजनीतिक विषमताओं सामाजिक करीतियों पर चोट करना है। इस संदर्भ में रामविलास शर्मा का कहना है "जितनी सफलता भारतेंदु युग के लेखकों को निबंध लेखन में मिली उतनी कविता और नाटक के क्षेत्र में भी नहीं मिली।"

द्विवेदी युगीन निबंध

द्विवेदी युगीन निबंध साहित्य महावीर प्रसाद द्विवेदी में समाहित है। उनका सबसे पहला कार्य यही रहा कि उन्होंने भाषा का संस्कार तथा परिष्कार कर दिया। उन्होंने भाषा के व्याकरण सम्मत प्रयोग तथा हिंदी विराम चिन्हों के उपयोग पर अधिक बल दिया। उनका भाषा संबंधी आदर्श यह था कि उन्होंने हिंदी को अन्य भाषाओं के शब्दों से सर्वथा अछूता न रखते हुए संस्कृत शब्द को वैसे के वैसे हिंदी भाषा में ले लेने की बात कही। द्विवेदी जी को नैतिकता प्रिय थी। जिसके कारण इस युग में अधिकतर नैतिक निंबंध लिखे गये। आचार्य द्विवेदी के अनुसार बेकन के निबंध आदर्श निबंध थे। इसलिए उन्होंने हिंदी में बेकन विचार रत्नावली के नाम से अनुवाद किया। इसके अतिरिक्त उनके निबंधों के संग्रह है म्युनिसिपैलिटी के कारनामे, आत्मनिवेदन, प्रभात, वैदिक देवता, रसरंजन, कवि और कविता। उनके निबंधों में वैचारिकता एवं गंभीरता है। भरतेंदु युग की हास्य व्यंग्य शैली का यहाँ पूर्णतः अभाव दिखायी देता है। इन निबंधों की भाषा शुध्द सार्थक, एवं परिमार्जित है। उनमें कहीं कहीं संस्कृतनिष्ठता भी है। भारतेंदु युग के निबंधों में जहाँ वैयक्तिकता की प्रधानता थी वही द्विवेदी युगीन निबंधों में वैचारिकता अधिक दिखायी देती है। वैयक्तिकता का पूर्णतः अभाव दिखायी देता है। द्विवेदी युगीन निबंधकारों में महावीर प्रसाद द्विवेदी के अतिरिक्त जो अन्य निबंधकार ते उनके नाम है माधव प्रसाद मिश्र, गोविंद नारायण मिश्र, बाबू श्यामसुंदर दास, अध्यापक पूर्ण सिंह, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, मिश्र बंधू, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी आदि। इन निबंधकारों ने द्विवेदी की विचारधारा का पूर्ण अनुसरण किया तथा विचार प्रधान निबंध लिखे। माधव प्रसाद के निबंध संग्रह का नाम है माधव मिश्र निबंधमाला।

गोविंदनारायण मिश्र की भाषा संस्कृतनिष्ठ एवं अलंकारों से पूर्ण थी। वाक्य लंबे लंबे तथा तत्सम एवं सामासिक पदावली कि अधिकता दिखायी देती है। तुलनात्मक समालोचना के लिए प्रख्यात पंडित पद्मसिंह शर्मा के दो निबंध संग्रह पद्म पराग और प्रबोध मंजरी इस नाम से इस दौर में प्रकाशित हुए। इनके निबंधों में वैयक्तिकता एवं भावुकता की प्रधानता हम देख सकते हैं। चंद्रधर शर्मा गुलेरी के निबंधों में प्रखर पांडित्य प्रदर्शन की झलक दिखायी पडती है। कछुआ धर्म इनका काफी लोकप्रिय निबंध संग्रह है। द्विवेदी युग के सर्वाधिक सशक्त निबंधकार के रूप में हम सरदार पूर्णसिंह जी का नाम ले सकते हैं। इन्होंने कुछ भावात्मक निबंधों की रचना की । तथा इनकी शैली की विशिष्ठता तथा भाषा की लाक्षणिकता के लिए ये सुविख्यात है। इनके निबंध के नाम है आचरण की सभ्यता, मजबूरी, कन्यादान, इत्यादि। कहा जा सकता है कि भारतेंदु युग के निबंध में पांडित्य प्रदर्शन नहीं था। बौध्दिक प्रदर्शन नहीं था। इन लेखकों की रूचि सभी विषयों में दिखायी देती है। लेकिन द्विवेदी युगीन निबंधों में वैचारिकता अधिक दिखायी देती है। भारतेंदु युगीन निबंधों की जैसी ताजगी जिंदादिली और व्यंग्य यहाँ नहीं है।